INTERNATIONAL BACCALAUREATE
BACCALAURÉAT INTERNATIONAL
BACHILLERATO INTERNACIONAL

HINDI A1 – HIGHER LEVEL – PAPER 1
HINDI A1 – NIVEAU SUPÉRIEUR – ÉPREUVE 1
HINDI A1 – NIVEL SUPERIOR – PRUEBA 1

Monday 8 May 2000 (morning)
Lundi 8 mai 2000 (matin)
Lunes 8 de mayo del 2000 (mañana)

4 hours / 4 heures / 4 horas

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Section A: Write a commentary on one passage.
- Section B: Answer one essay question. Refer mainly to works studied in Part 3 (Groups of Works); references to other works are permissible but must not form the main body of your answer.

INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- Ne pas ouvrir cette épreuve avant d'y être autorisé.
- Section A : Écrire un commentaire sur un passage.
- Section B : Traiter un sujet de composition. Se référer principalement aux œuvres étudiées dans la troisième partie (Groupes d'œuvres) ; les références à d'autres œuvres sont permises mais ne doivent pas constituer l'essentiel de la réponse.

INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Sección A: Escriba un comentario sobre uno de los fragmentos.
- Sección B: Elija un tema de redacción. Su respuesta debe centrarse principalmente en las obras estudiadas para la Parte 3 (Grupos de obras); se permiten referencias a otras obras siempre que no formen la parte principal de la respuesta.

भाग `क`

नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, १(क) तथा १(ख) । इन दोनों में से किसी एक पर व्याख्या कीजिए ।

१(क)

'क्या दिया है मैने ?'
'घातक प्यार ! बेटे ने जो कुछ चाहा वह उसे मिलता रहा । उसे तुमने कभी एहसास नहीं होने दिया कि कुछ पाने के लिए खोना भी होता है । कुछ बनने के लिए तन-मन को दबाना पड़ता है, खून पसीना एक करना होता है । तुम्हारे इस घातक प्रेम ने विनोद को निकम्मा ही नहीं, उच्छृंखल भी बना दिया । तुम्हारे लाड प्यार के चलते वह अपनी ज़िम्मेदारी और कर्त्तव्य को पहचान नहीं पाया ।'
बात काफी हद तक सही थी । बच्चे उंगली पकड़ कर चलना सीखते हैं । किन्तु, चलना सीख लेने के बाद भी यदि उसे कदम-कदम पर सहारा पाने का आदी बना दिया जाये तो हृष्ट-पुष्ट और स्वस्थ रहने के बावजूद बह पंगु बन जाता है । सिनेमा जाना हो या होटल, पिकनिक का कार्यक्रम हो या पर्यटन का, राधा की ओर से विनोद को तुरन्त अनुमति मिल जाती थी । इतना ही नहीं, आवश्यकता से अधिक रुपये- पैसे भी दे दिये जाते थे । रामनारायण जी यदि कभी हिसाब-किताब के बारे में पूछना चाहते तो राधा रोक देती थी - - 'बच्चा है, बाप के राज मे घूमने-फिरने की इच्छा पूरी नहीं करेगा, तो फिर कब करेगा ?'
रामनारायण की बात सुनकर राधा क्रोध से भभक उठी -- 'तुम्हारा अतीत मेरे बच्चों का भविष्य नहीं बन सकता । क्या यही चाहते हो कि तुम्हें अपने माता-पिता से उपेक्षा का जो अनुभव मिला है, उसे तुम्हारा बेटा भी भोग कर देख ले ।' रामनारायण जी खामोश रहते हैं । उनके चेहरे पर एक अजीब मुस्कराहट कौंध जाती है, जिसका भाव केवल राधा ही समझ सकती थी । रामनारायण जी संयत स्वर में कहते हैं, 'मेरे अनुभवों का नतीजा मेरी पूरी ज़िन्दगी है, जिसमें तुम और तुम्हारी संतान भी शामिल है, यदि तुम ठंडे दिल-दिमाग से विचार करोगी तो देखोगी कि तुम्हारे प्रयोग का परिणाम क्या हुआ है ? तुम्हारे बेटे को पढ़ने लिखने की सुविधाएं मिली हैं । स्नेह, स्दभाव का अभाव उसने जाना तक नहीं । यहां तक तो ठीक था । लेकिन तुमने उसकी ज़िन्दगी को फूलों की सेज में बदलने के उत्साह में उसे ऐयाश और चरित्रहीन बना दिया ज़िम्मेदारी और कर्त्तव्य का एहसास उसे कभी हुआ ही नहीं । वह भोग को ही ज़िन्दगी का लक्ष्य बना बैठा है । तुम जानती हो कि मालती उसकी ज़िन्दगी में छठी औरत है । पतन की राह पर यदि उसकी यही रफ्तार रही तो जल्दी ही उसके विनाश की घड़ी भी आ पहुंचेगी ।'

शिवसागर मिश्र "कहें गांव की गाथा "1991

(ख)

कहां सरल है ?

इन, उनके जैसा हो लेना
बहुत सरल है,
लेकिन अपने जैसा होना-
बहुत बिरल है ।

औरों से कुछ अलग तबीयत बूबासों में
मुद्दत से रहते आए हम देवासों में
पैर टिकाए इस धरती पर ठीक तरह से-
विचरे हैं मनपाखी अपने आकाशों में

कंधे भले गैर के हों पर
अरथी पर अपनी सो लेना
कहां सरल है ?

कभी नहीं थे ऐसे संकट पहिचानों के
मेजबान के चिहरे लगते मेहमानों से
सुगढ शख्सियत के मानी कुछ और हो गए-
पशुओं से हो गए मूल्य कम इंसानों के,

गैरों की क्या बात करें हम
कंधो सिर अपना ढो लेना कहां सहल है ?

घुन-सी जहां लगी हों चिंताएं होने की,
धरती फाड़ भविष्यों को क्रमशः बोने की
बना रहे क्रम ये जीवन का इसी लिए बस
करनी होगी पहल शादियों की, गौने की

भले न हों हम शहंशाह
अंतस में लेकिन अपने भी
ताजमहल हैं ।

नईम, 'आजकल' दिसंबर 1998

भाग 'ख'

नीचे दिए हुए विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए । इस भाग में आपका उत्तर 'पार्ट ३' की पढ़ी हुई रचनायों में से, कम से कम दो रचनायों पर आधारित होना चाहिए । आप दूसरी कृतियों की भी चर्चा कर सकते/सकती हैं, परन्तु आपका निबंध इन पर आधारित नहीं होना चाहिए ।

भक्ति काव्य

या

२ जिन कृतियों को आप ने पढ़ा है उनकी काव्यगत विशेषताओं के आधार पर टिप्पणी कीजिए कि भक्ति रस क्या है ?

या

३ इस काल की कविता की काव्यगत विशेषताएं पाठक की भावनायों को कैसे प्रभावित करती हैं ? जिन कृतियों को आप ने पढ़ा है उनके आधार पर टिप्पणी कीजिए ।

नाटक

या

४ क्या नाटकों के अंत में विषयवस्तु में वर्णन किये गये संघर्ष का प्रभावशाली ढंग से समाधान हो सका है ? जिन नाटकों को आप ने पढ़ा है उनके आधार पर टिप्पणी कीजिए ।

या

५ जिन नाटकों को आपने पढ़ा है उनके आधार पर टिप्पणी कीजिए कि क्या उनके संवादों द्वारा पात्रों के चरित्र का सही चित्रण हो सका है ?

कविता (१)

या

६ इस काल की कविता को प्रेम की अनुभूतियों तथा प्रकृति चित्रण की प्रधानता ने कैसे प्रभावित किया है ? जिन रचनायों को आपने पढ़ा है उनके आधार उत्तर दीजिए ।

या

७ जिन रचनायों को आपने पढ़ा है उनके आधार पर टिप्पणी कीजिए कि कवियों ने विषयवस्तु को प्रस्तुत करने के लिए कैसे काव्यगत ढंगों का प्रयोग किया है ?

कविता (२)

या

८ आधुनिक कविता को आप किस आधार पर आधुनिक कह सकते हैं ? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए उन कवियों द्वारा प्रयोग किये गये काव्यगत ढंगों तथा शैली पर टिप्पणी कीजिए ।

या

९ 'आधुनिक कविता के विषयवस्तु में जनसामान्य लोग तथा उनकी समस्याओं की प्रधानता है' । जिन रचनायों को आपने पढ़ा है उनके आधार पर टिप्पणी कीजिए ।

निबंध एवं आत्मकथा

या

१० आत्मकथा में अपने ही जीवन के बारे में स्वतंत्रता से लिखना कहां तक संभव है ? जिन आत्मकथायों को आपने पढ़ा है उनके आधार पर समीक्षा कीजिए ।

या

११ 'निबंध किसी विषय पर लिखी एक साहित्यिक रचना है जो साधारणतया गद्यात्मक और संक्षिप्त होती है' । जिन निबंधों को आपने पढ़ा है उनके आधार पर इस कथन का विश्लेषण कीजिए ।

उपन्यास में ग्राम्य-जीवन का चित्रण

या

१२ 'उपन्यासों मे वर्णित जनसामान्य, समाज द्वारा शोषित तथा पीड़ित किए गए हैं '। जिन उपन्यासों को आप ने पढ़ा है उनके आधार पर इस कथन का विश्लेषण कीजिए ।

या

१३ 'ग्राम्य-जीवन का वर्णन करते समय उपन्यासकारों ने समाज की समस्याएं प्रस्तुत की हैं ।' जिन उपन्यासों को आप ने पढ़ा है उनके विषयवस्तु तथा पात्रों के चित्रण के आधार पर इस पर टिप्पणी कीजिए ।